ISSN: 0973-0583

पुरातत्त्व की दृष्टि में राजगीर

सुबोध कुमार
शोध छात्र, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

राजगीर पाँच पहाड़ियों वैभार, उदयगिरि, विपुलाचल, चंद्रगिरि एवं रत्नागिरि से घिरा है। इन पाँचों पहाड़ियों के ऊपर एक रक्षा प्राचीर बनायी गयी थी। जो लगभग 48 किलोमीटर लम्बी है। इस दीवार को "साइक्लोपियन बौल" कहा जाता है। ऐसी रक्षा प्राचीर भारत में अन्यत्र नहीं मिली है। यह दीवार बड़े-बड़े पाषाण खंडो से बनी है परन्तु इसे किसी गारे से नहीं जोड़ा गया है। यह दीवार लगभग 3.5 मीटर चौडी एवं 6.5 मीटर ऊँची है जगह-जगह चौकोर चबूतरों का निर्माण भी किया गया है। राजगृह में प्रवेश के लिए इस दीवार में सिर्फ दो प्रवेश द्वार है। एक उत्तर की ओर तथा दूसरा दक्षिण में वाणगंगा के निकट।

इस दीवार की चर्चा चीनी यात्रियों के यात्रा वृतांत में नहीं है। इसका काल निर्धारण पुराविदों एवं इतिहासकारों के कौतूहल का विषय है। ईरान तथा दक्षिण अरब में ऐसे रक्षा प्राचीर द्रष्टव्य है जिनका काल 14-13वीं शताब्दी ई.पू. है। पुराणों के अनुसार जरासंघ एवं उसके पूर्ववर्ती मगध शासकों की राजधानी यहाँ थी। अजातशत्रु के बाद कोई समृद्ध शासक नहीं हुआ जिसने इतने बृहत दीवार के व्यय का कार्य कराया होगा। संभव है कि मगध शासकों ने इरान के रक्षा प्राचीर से प्रेरित होकर इसका निर्माण किया होगा।

जरासंघ का बैठक

राजगीर में एक पत्थरों से बना चौकोर चबूतरा है जो गर्म झरनों के निकट अवस्थित है। इसकी ऊँचाई 8. 30 मीटर है। इसका निर्माण भी साइक्लोपियनवाल की तरह अनगदे पत्थरों से हुआ है। पुराणों के अनुसार जरासंघ मगध का सम्राट था जिसका बध कृष्ण ने भीम के द्वारा करवाया था। ह्वेनसांग ने इसका उल्लेख किया है। प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में भी इसकी चर्चा है। राजगीर प्रवास के दौरान बुद्ध भी यहाँ बैठते थे। कनिंघम के अनुसार यह अशोक के 250 वर्षो पहले बनवाया गया होगा। बिना गारे के निर्मित इस जरासंघ के बैठक की स्थापत्य तत्कालीन उत्कृष्ट स्थापत्य को दर्शाता है।

पिप्पल गुहा

जरासंघ की बैठका के निकट एक गुफा है जिसका निर्माण संभवत: बैठका के निर्माण के लिए पत्थरों को खोदने के क्रम में हुआ होगा। यह पिपल गुहा के नाम से जाना जाता है। फाह्यान के अनुसार बुद्ध यहाँ राजगीर प्रवास के दौरान ध्यान लगाया करते थे। ह्वेनसांग ने यहाँ बौद्ध भिक्षुओं को रहते देखा था। कनिंघम इसे असुरराज जरासंघ द्वारा निर्मित मानते हैं। उत्खनन के दौरान इसके निचले भाग में ईटों के दीवाल के अवशेष मिले थे। जिसका काल बुद्ध के पूर्व निर्धारित किया गया है। इस गुफा के छत पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी थी इसकी माप 12 गुणा 9 मीटर तथा ऊँचाई 5.4 से 6 मीटर है। पालिग्रंथ इसे महाकश्यप का निवास मानते है।

गृद्धकूट

ह्वेनसांग के अनुसार बिम्बिसार ने भगवान बुद्ध का दर्शन इसी स्थल पर जाकर किया था। बौद्ध साहित्य के अनुसार बुद्ध राजगृह में अपना वर्षावास गृद्धकूट पर्वत की चोटी पर करते थे। पहाड़ी के पश्चिमी छोर पर ह्वेनसांग ने ईंटो से बना विहार देखा था जिसके पूर्वी द्वार पर बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा स्थापित थी।

बिम्बिसार का जेल

गृद्धकूट पर्वत से कुछ दूरी पर एक आयताकार दुर्ग के अवशेष मिले हैं। इसके दीवार की भुटाई 2.55 मीटर है। इसके अन्दर अनेक छोटे-छोटे कक्ष है। एक कक्ष में लोहे की एक बेडी मिली है जिसके आधार पर इसकी पहचान कारागार के रूप में की गयी है जहां अजातशत्रु ने अपने पिता विम्बिसार को कैद कर गृद्धकूट पर्वत पर विचरण करते देखा करता था। इस स्थल से गृद्धकूट की चोटी स्पष्ट दिखती है।

ISSN: 0973-0583

जीवक विहार

जीवक मगध सम्राट बिम्बिसार के राज बैद्य थे जिन्हें प्राचीन साहित्य में महान चिकित्सक बताया गया है। ह्वेनसांग ने एक भव्य विहार का उल्लेख किया है। जिसे जीवक ने बनवाया था। उत्खनन में एक विशालकाय विहार के अवशेष मिले है जिसके मध्य में एक अंडाकार कक्ष है। खुदाई में भवन निर्माण के दो चरणों का पत्ता चला है पहले चरण में अपरिष्कृत लाल मृदभांड के टुकड़े मिले है। उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभांड का कोई उदाहरण नहीं मिला है। यह साबित करता है कि राजगीर में उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभांड के पूर्व से ही लोग निवास करते थे।

दूसरे चरण में उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभांड के उल्लेखनीय उदाहरण मिले हैं। स्थापत्य अवशेष संभवत: बौद्ध विहारों के प्राचीनतम उदाहरण है। इनके एक फीट नीचे प्राकृतिक चट्टाने है जिससे पता चलता है ये अवशेष प्राचीनतम है। इन विहारों में कुछ चौकोर तथा कुछ अंडाकार है।

नवीन रक्षा प्राचीर

1905-06 ई० में डी.आर साहनी द्वारा 2.10 मीटर की गहराई तथा खुदाई की गयी जिसमें 2 मीटर का एक वर्गाकार कक्ष मिला है। कक्ष में 27.2 गुण 20 सेमी. की ईटे प्रयुक्त की गयी है। इसका काल दूसरी शताब्दी ई०पू० माना गया है। इस स्थल के विस्तृत उत्खनन की आवश्यकता है।

मनियार मठ:

यह स्थल राजगीर से वाणगंगा की ओर जाने वाली सड़क के किनारे स्थित हैं। कनिंघम को यहां 5.80 मी. ऊँचे टीले पर स्थित एक जैन मंदिर के पास खुदाई में एक 3 मीटर व्यास वाले मलवे से भरा कुआं मिला था। इसके अन्दर उसे तीन लघु प्रतिमाएं मिली, जिनमें एक के निचले हिस्से में पलंगपर लेटी माया एवं उसकी ऊपरी भाग में दो उपासकों के साथ तपस्वी बुद्ध की आकृतियाँ उत्कीर्ण है। दूसरी प्रतिमा पार्श्वनाथ की है। जिसके सिर पर सात फनों वाले नाग का छत्र है। तीसरी प्रतिमा नन्दी पर सवार महादेव की प्रतीत होती है जो खंडित अवस्था में है। कनिंघम द्वारा टीले के उत्तर-पूर्व एवं पश्चिम की ओर कराये गये उत्खनन में ईट निर्मित छोटे कमरे के अवशेष मिले, उसमें ग्रेनाइट के खम्भे लगे थे। दक्षिण की ओर मुख्य भवन के अवशेष भी मिले। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक बेलनाकार मीनार है जो अन्दर से खोखली है। बाद में इस मीनार के आधार के चारों तरफ गचकारी की प्रतिमाओं का निर्माण किया गया। इन प्रतिभाओं की स्थिति खस्ताहाल है। इनमें गणेश नटराज, चतुर्भुज विष्णु एवं छ: नाग-नागिन की प्रतिमाओं की पहचान की जा सकी है। ब्लाख के अनुसार इसका समय 350-500 ई० माना गया है। इस स्तुप के अन्दर जाने का कोई मार्ग नहीं है। ब्लाख एवं मार्शल इसे शिवलिंग मानते है। ऐसे शिवलिंग कश्मीर के फतेहगढ़ एवं मथुरा के निकट तिरूपराकुरम चट्टान पर देखे जा सकते है। बाद के उत्खनन में पता चला कि राह मीनार दो कालों में बने भवनों के अवशेषों के ऊपर स्थित है। बड़ी संख्या में मृदभांड एवं मृणमूतियाँ भी मिली है। बर्त्तनों पर सर्प एवं जानवरों की आकृतियाँ है। आकारों में लंबी गर्दन वाले बड़े-बड़े घड़े एवं टोटीदार बर्त्तन मिले है। इनका काल छठी शताब्दी ई०पू० निर्धारित किया गया है। यहाँ मथुरा के लाल चित्रदार पत्थर से बना एक मूर्तिफलक मिला है जिसके दोनो ओर आकृतियाँ उत्कीर्ण है। इनमें सर्पफन सुक्त पुरूष एवं नारी आकृतियाँ बनी है। एक फलक के नीचे "मणिनाग" एवं एक के नीचे "सुमागधी" अंकित है, इनकी लीपि प्रथम-दूसरी शताब्दी ई०की लगती है।

इन अवशेषों के आधार पर हम कह सकते है कि छठी शताब्दी ई०पू० से गुप्तोत्तर काल तक यह स्थल नागपूजा का केन्द्र था। नाग पूजा की परम्परा यहाँ किसी न किसी रूप में 15वीं शताब्दी तक विद्यमान थी। नाग पूजा के साथ यहाँ शिव भक्ति भी प्रचलित थी। यहाँ की प्राचीनता जानने के लिए विस्तृत उत्खनन की आवश्यकता हैं।

सप्तकर्णी गुहा

बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात बौद्ध आचार्य महाकश्यप की अध्यक्षता में अजातशत्रु द्वारा राजगीर में बौद्ध संस्कृति का आयोजन इसी सप्तवर्णी गुहा में किया गया था। इस संगीति में 500 अर्हतो ने भाग लिया था। ह्वेनसांग के अनुसार वेणुवन से 5-6 किमी दूर दक्षिण-पश्चिम दक्षिणी पहाड़ी के उत्तरी

भाग में स्थित पाषाण गुहा में यह आयोजित हुआ था। मार्शल ने पीपल गुहा के पश्चिम एक स्थान की पहचान की जहाँ चट्टान को चौरस बनाने का प्रमाण द्रष्टव्य है। चबुतरे की बाहरी किनारे पर दीवाल के अवशेष भी मिले है।

अजातशत्रु स्तूप

फाह्यान, ह्वेनसांग तथा बौद्ध साहित्य कहता है कि इसका निर्माण मौर्य सम्राट दशरथ के समय हुआ होगा। दूसरी गुफा स्वर्ण भंडार गुफा के बाद बनाई गई होगी क्योंकि इसमें मौर्यकालीन कोई विशेषता नहीं है। इस गुफा के सामने एक बरामदे का चिन्ह द्रष्टव्य है। गुफा के ऊपर एक अन्य मंजिल के भी अवशेष मिले है। इसका निर्माणीाी चौथी-पांचवी शताब्दी में हुआ होगा।

वेणुवन

ब्लास ने 1905-06 में इस टीले की खुदाइ की थी। इसमें एक कमरा तथा ईंट की निर्मित स्तूपों के आधार मिले हो। ग्यारहवी शताब्दी का अभिलेख सुक्त एक बोधिसत्व प्रतिमा भी यहाँ मिली थी। टीले के पास सरस्वती नदी के पूर्व में वेणुवन अवस्थित है। टीले के उत्तर में एक तालाब है जिसकी पहचान करण्ड सरोवर के रूप में की गयी है।

बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि बिम्बिसार ने भगवान बुद्ध को उनके राजगृह प्रवास के लिए वेणुवन का दान में दिया था। फाह्यान तथा ह्वेनसांग के अनुसार बुद्ध के अस्थि अवशेष के एक भाग पर अजातशत्रु द्वारा राजगीर में एक स्तूप बनवाया गया था। वेणुवन से पूर्व सड़क के किनारे एक पाषाण अवशेष है जिसकी पहचान कुछ विद्वान इस स्तूप से करते है। परन्तु ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि अजातशत्रु स्तूप कहाँ पर स्थित है।

स्वर्ण भंडार गुफा

वैभार पहाड़ी के दक्षिणी भाग में दो गुफाएँ है, पश्चिमी गुफा को सोन भंडार गुहा कहा जाता है। इस गुफा में एक दरवाजा और एक खिड़की है। दीवार पर मौर्यकालीन पॉलिस जैसी चमक है। इस गुफा की बनावट बराबर की गुफाओं जैसी है। यहाँ एक अभिलेख उत्कीर्ण है जिसमें उल्लेख है कि जैन मुनि आचार्य वीर देव ने जैन प्रतिमाओं की स्थापना के लिए इस गुफा का निर्माण करवाया। अभिलेख चौथी शताब्दी ईट का है। दीवार की पॉलिस से प्रतीत वेणुवन का उल्लेख किया है। रणभूमि स्थानीय लोग इस स्थल को जरासंघ का अखाड़ा के नाम से जानते है। सरस्वती नदी के पश्चिमी शाखा के पास सोन भंडार गुफा से कुछ दूरी पर यह स्थित है। महाभारत में उल्लेख है कि जरासंघ एवं भीम के बीच राजगृह में मल्लयुद्ध हुआ था। जिसमें जरासंघ मारा गया था। उसके खून से यहाँ की धरती लाल हो गयी थी अभी भी यहाँ की भूमि लाल है।

निष्कर्ष:

राजगीर की प्राचीनता को विस्तार से जानने की आवश्यकता है। धार्मिक मान्यताओं, पुरात्वअवशेषों, स्थापत्य अवशेषों एवं मूर्तियों से स्पष्ट है कि छठी शताब्दी ई.पू. के भी पहले से लेकर मध्यकाल तक यह स्थल ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मावर्लंबियों के लिए पवित्र स्थल रहा है। वैभारगिरि के पास स्थित गर्म जल के कुण्डो के पास-स्थित हिन्दू मंदिरों एवं इस पर्वत की चोटी पर स्थित प्राचीन जैन एवं शिवमंदिर इसके प्रमाण है। मध्यकाल में यह मुस्लिम अवस्था का केन्द्र था। ब्राह्म कुण्ड (मखदुम कुण्ड) एवं मखदुम शाह का मकबरा आज भी मुस्लिम सम्प्रदाय के पवित्र स्थल है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. लेग्गवे, ट्रेलेल्स ऑफ फाहियान पृ0-81-82 ।
2. एस. बील ट्रेवेल्स ऑफ ह्वेनसांग पृ0 370 ।
3. वही पृ. 374
4. सी. ए.एस. आर- 3 पृ. 142-143
5. लेग्गवे वही पृ0 81-82
6. एस.नील वही पृ. 371-73
7. वही
8. पाटिल डी.आर. वही पृ. 448